KAAV INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS, HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES
A REFEREED BLIND PEER REVIEW QUARTERLY JOURNAL
KIJAHS/OCT-DEC2017/VOL-4/ISS-4/A2 PAGE NO.5-8
ISSN: 2348-4349 IMPACT FACTOR (2017) – 7.9183
WWW.KAAVPUBLICATIONS.ORG

वृद्धा आश्रम एवं उनके निवासियों का समाजशास्त्रीय विश्लेषणात्मक अध्ययन ''सेवा सदन, प्रमोदवन, चित्रकूट'' के विशेष संदर्भ में

[1]डॉ0 उमेश कुमार दीक्षित

[1]रिसर्च फैलो (पी0डी0एफ0), आई0सी0एस0एस0आर0, नई दिल्ली

Abstract

भारतीय समाज की पहचान उसकी संस्कृति की सुदृढता है जो राम एवं श्रवण कुमार जैसे पुत्रों का इतिहास है, जो माता–पिता की इच्छा को आज्ञा मानकर अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पण कर दिया, ऐसी संस्कृति में जन्म लेने के बाद भी भारतवर्ष में वृद्धावस्था की समस्या यह स्पष्ट करती है कि हमारा सांस्कृतिक क्षरण हो चुका है। पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव हमारे जीवन पर इतना पड़ चुका है कि हम अपने परिवार में तथा समाज में वृद्धों को यथोचित सम्मान तथा समुचित स्थान नहीं प्रदान कर पा रहे है। भारत में वृद्धावस्था की समस्या एक सार्भौमिक स्वरूप ग्रहण कर चुकी है क्योंकि किसी न किसी रूप में आज यह समस्या समाज के ज्यादातर परिवारों में देखी जा सकती है जिसका प्रमुख कारण दो पीढ़ियों के मध्य विभिन्न मुददों पर पाया जाने वाला मतभेद या टकराव है, क्योंकि सामाजिक संरचना में होने वाले परिवर्तनों के साथ युवा तो स्वयं को सरलता से परिवर्तित कर लेती है, किन्तु हमारी वृद्ध पीढ़ी अपने परम्परागत मूल्यों के साथ किसी प्रकार का समझौता करना नहीं चाहती, वह ऐसा महसूस करती है कि आज का युवा वर्ग या युवा पीढ़ी गलत मार्ग पर चल रही है जिन्हें वह सुधारना चाहती है और यही सुधारवादी प्रवृत्ति उनमें संघर्ष को जन्म देती है।

KAAV

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org